ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 31 29 अक्टूबर से 4 नवम्बर, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 का. कृ. 02

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के साधारण अधिवेशन में 15 से 20 जनवरी, 2016 तक

राजस्थान में जन-चेतना यात्रा निकालने का हुआ ऐतिहासिक निर्णय

जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू व झुंझनू जिलों से होकर गुजरेगी जन-चेतना यात्रा

नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या, अश्लीलता, धार्मिक पारवण्ड, किसानों की दुर्दशा एवं वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर लोगों को किया जायेगा जागरूक

यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी करेंगे

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के साधारण सभा के सम्मेलन में लिये गये महत्त्वपूर्ण निर्णय

समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को जड़मूल से निर्मूलन करने के लिए राजस्थान में जन-चेतना यात्रा निकालने का निर्णय लिया गया है। यह यात्रा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा वैदिक विरक्त मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की जायेगी। इस ऐतिहासिक यात्रा का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा कार्यकारी प्रधान एवं राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी जी करेंगे। इस यात्रा के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, गोहत्या, अश्लीलता, धार्मिक पाखण्ड, किसानों की दुर्दशा वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली, महिला उत्पीड़न तथा भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध आम जनता को जागरूक किया जायेगा। राजस्थान में निकाली जाने वाली यह जन चेतना यात्रा जयपुर से प्रारम्भ होकर दौसा, भरतपुर, अलवर, सीकर, चुरू तथा झुंझनू जिलों से होकर गुजरेगी। इस यात्रा में स्थान-स्थान पर सार्वजनिक सभाएं कर लोगों को सामाजिक बुराईयों से अवगत कराया जायेगा तथा इन्हें दूर करने के लिए एकजुटता स्थापित की जायेगी।

इस यात्रा में भारी संख्या में संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें, कार्यकर्ता तथा आर्य समाज के प्रतिष्ठा प्राप्त भजनोपदेशक सम्मिलित रहेंगे।

इस ऐतिहासिक यात्रा की तैयारी के लिए 21 सदस्यीय संयोजन समिति का गठन राजस्थान सभा के प्रधान श्री हवासिंह आर्य एडवोकेट की अध्यक्षता में किया गया है। शीघ्र ही यात्रा का रूट पड़ाव तथा अन्य विवरण तैयार करके आप सभी तक पहुंचाया जायेगा। जो सज्जन इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं वह अभी से मन बना लें तथा अपनी तथा अपने साथियों की स्वीकृति हमें शीघ्र भिजायें। यात्रा के लिए आर्थिक सहयोग तथा यदि वाहन है तो अपना वाहन डीजल सहित देकर पुण्य के भागी बनें।

24 अक्टूबर को सायं 6 से 9 बजे तक राजस्थान सभा की अन्तरंग सभा की बैठक सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री सत्यव्रत सामवेदी जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सर्वश्री विरजानन्द उपप्रधान राजस्थान सभा, श्री राम सिंह आर्य कार्यकारी प्रधान राजस्थान सभा, भंवर लाल आर्य अधिष्ठाता आर्यवीर दल, श्री विनोद लाल गांधी, श्री हवा सिंह आर्य सभा प्रधान, श्री हुकुम चन्द्र शास्त्री उपस्थित रहे। संचालन सभा मंत्री श्री ओम प्रकाश वर्मा ने किया। बैठक में संगठन सम्बन्धी विविध विषयों पर गहन चिन्तन करने के बाद निश्चय किया गया कि राजस्थान में श्री हवासिंह जी की अध्यक्षता में कार्य कर रही सभा ही वैधानिक एवं असली सभा है। जिसके साथ प्रान्त की अधिकतर आर्य समाजें सम्बद्ध हैं। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने राजस्थान की समस्त

शेष पृष्ठ 4 पर

वेद यह भी कहता है

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार, वेदाचार्य

वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है, इन कथन में वेदों में नाना विद्याओं का प्रतिपादन किया जाता है, जो ठीक ही है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य आर्यसमाजों में एतद्विषयक सम्मेलन तथा गोष्ठियाँ इसी संदर्भ में की जाती है, जिनमें वेद विषयक गहन चर्चा करते हुए विविधि विधाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इनमें वेद को विश्वबन्धुत्व सौहार्द तथा शान्ति का प्रतिपादक भी बतलाया जाता है। वेदों में यह सब कुछ है, मेरा इससे तनिक भी मतभेद नहीं, किन्तु वेदों में इसके अतिरिक्त भी कुछ है, इसी ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

वेदों में विधियात्मक उपदेशों के साथ निषेधात्मक उपदेश भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। निषेधात्मक से मेरा अभिप्राय उन कार्यों से है जिनका वेदों में निषेध किया गया है। न केवल निषेध ही अपितु उन दुष्कृत्यों के करने वालों के लिए दण्ड का विधान भी वहां पर किया गया है। ऐसे कार्य सम्पूर्ण समाज एवं राष्ट्र में प्रचुरता के साथ व्याप्त है, तथापि हमारा ध्यान उन पर नहीं जाता। यदि जाता भी है तो अनाचार, दुराचार आदि दुष्कृत्यों के लिए हम दण्डात्मक प्रणाली का प्रयोग नहीं करते जिस कारण ऐसे दुष्कृत्य पनपते तथा फलते-फूलते हैं। अब मैं संक्षेप में इस प्रकार के कार्यों की ओर संकेत करता हूँ।

यदि नो गा हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो सो अवीरहा:॥ (अथर्व. 1/16/4)

मन्त्र का अर्थ स्पष्ट है कि यदि कोई भी व्यक्ति हमारी गाय या घोडे आदि पशु का तथा निरपराध व्यक्तियों का वध करता है तो उसे गोली मार देनी चाहिए। आप यहाँ वेद का आदेश देखिए कि ऐसे व्यक्ति को मारने की बात कही है। उसे कारागार में डालने, अन्य दण्ड देने या उस पर न्यायिक अभियोग चलाने की बात नहीं कही गई है, क्योंकि इन कार्यों से ऐसे पापकर्ता को उचित दण्ड नहीं मिल सकता, यदि कुछ दण्ड मिलेगा भी तो लम्बे समय के बाद मिलेगा, जिससे न तो अपराधी की अपराधवृत्ति समाप्त होगी तथा न ही वह अपराध समाप्त होगा जो कि उसने किया है।

इस कार्य को हम राष्ट्रीय संदर्भ में देखते हैं। जब भी गौ हत्या पर प्रतिबन्ध की बात आती है, मुसलमान मास-भक्षण तथा गौ हत्या को अपना अधिकार बता कर इसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं। उनकी इस मांग का सरकार पर भी असर पड़ता है। वेद विश्व की निधि है तथा आर्यों का धर्म ग्रन्थ भी है, यदि यहाँ पर गो आदि पशुओं की हत्या को रोकने तथा इनके हत्यारे को मारने की बात कही गई है तो हमारे इस संवैधानिक अधिकार की ओर सरकार का ध्यान क्यों नहीं जाता तथा समूचा हिन्दू समाज इसके पक्ष में क्यों नहीं खड़ा हो जाता? क्यों, गो रक्षकों पर डण्डे बरसाये जाते हैं, इसीलिए कि हम अपने इस धार्मिक अधिकार की रक्षा के लिये जागरूक एवं समृद्ध नहीं है। हम फिर भी ऐसी ही गो घातक, पशुहत्यारी सरकार को वोट देते हैं, उसके अंग बनते हैं, जबकि गोघातकों के वोटों की भिक्षा उन्हें मांगनी पड़ती है। पशु हत्या का एक पक्ष यह भी है कि कत्ल किये जाते हुए पशु का जो क्रन्दन, चीत्कार वायुमण्डल में समाविष्ट होता है, उससे सम्पूर्ण वातावरण भी विषाक्त तमोगुणी तथा हिंसा प्रधान बन रहा है। शब्द नित्य है। अत: उनका वह क्रन्दन समाप्त न होकर समूचे वातावरण को दूषित कर रहा है। इसके अतिरिक्त कत्ल किये जाने वाले पशु के बहते हुए रक्त से भी सम्पूर्ण वायुमण्डल दूषित होता है।

हमें इन कार्यों को रोकने के लिए सशक्त आन्दोलन करने चाहिए, फिर भी यदि सरकार ध्यान नहीं देती तो स्वयं सामाजिक संगठन बनाकर ऐसे व्यक्तियों का वध कर देना चाहिए, यही वेद का आदेश है। वेद ने यह नहीं कहा कि सरकार ही ऐसे व्यक्ति को दण्ड दे। वह तो कह रहा है कि विध्याम: अर्थात् हम जनता जनार्दन ऐसे दुष्कर्मी व्यक्तियों को मारते हैं। अपने इस कथन को एक उदाहरण से स्पष्ट करता हूँ। दिल्ली में प्राय: भैंस आदि के सड़कों पर घूमने पर प्रतिबन्ध है। सम्भवत: अन्य शहरों में भी हो। कई बार नगर निगम के कर्मचारी ऐसी गायों को पकड़कर ले जाते हैं, किन्तु इसके साथ ही रात्रि में सड़कों पर घूमने वाली गायों को कसाई भी पकड़ कर ले जाते हैं तथा उसका वध कर देते हैं। गोपालक यही समझता है कि नगरनिगम के कर्मचारी ले गये होंगे। यह कार्य आजकल उत्तर प्रदेश के ग्रामों में भी किया जा रहा है। समाजवादी पार्टी के शासन में गुण्डे बदमाश तथा मुसलमान बेखौफ हो जाते हैं।

मेरा मानना है कि हमें भी संगठन बनाकर ऐसे गोघातकों का वध कर देना चाहिए। गोघातक रात्रि में चोरी से ही गायों का अपहरण तथा हत्या करते हैं। गोघातकों के लिये यही मार्ग अपनाना चाहिए। तभी वेद का आदेश पूरा होगा। यही नीति उसके प्रति भी अपनाई जानी चाहिए जो कि निरपराध व्यक्तियों का अपहरण, हत्या, बलात्कार तथा लूटपाट आदि दुष्कृत्यों को करते हैं। सरकार के भरोसे छोड़ने से न तो अपराध कम होंगे तथा न ही अपराधी समाप्त होंगे। जीव हत्या के सामन ही मद्यपान का भी प्रश्न है। वेदों में स्पष्ट रूप से मद्यपान का निषेध किया गया है। यही सब अनर्थों का मूल है। वेद का आश्रय लेकर राष्ट्रमय स्तर पर मद्यपान पर प्रतिबन्ध की मांगे हमें उठानी चाहिए।

अब मैं एक अन्य महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न उपस्थित कर रहा हूँ। मुसलमानों को बहुविवाह तथा अनेक सन्तान पैदा करने की छूट है, जबकि हिन्दुओं के लिए हिन्दू कोडबिल जैसे नियम लागू हैं। प्रश्न है कि एक ही देश में दो प्रकार के नियम लागू क्यों है? मुसलमानों को शहीदत तथा कुरान के आधार पर यह छूट मिली हुई है। इसमें पहला प्रश्न तो यही है कि एक धर्मनिरपेक्ष देश में एक सम्प्रदाय विशेष को धर्म के आधार पर छूट क्यों दी जा रही है? क्या यह धर्मनिरपेक्षता का खुल्लम-खुल्ला उल्लंघन नहीं है? यदि ऐसा है तो हिन्दुओं को भी अपने धर्मग्रन्थ वेद के आदेश का पालन करना तथा सरकार से कराना चाहिए। वेद स्पष्ट रूप से कहता है कि एक व्यक्ति दस सन्तान तक उत्पन्न कर सकता है। अधिक सन्तान उत्पन्न करने वाले मुसलमान ही वेदों के इस आदेश का पालन कर रहे हैं, जबकि हिन्दू लोग एक या दो के नारे में भुलावे में आकर न केवल वेद के आदेश का उल्लंघन कर रहे हैं, अपितु राष्ट्रीय हानि भी कर रहे हैं।

यह बहुत ही गम्भीर प्रश्न है, इसीलिए आपके सामने इसे उठा रहा हूँ। सभी जानते हैं कि आज देश का शासन तथा राजनीति जनसंख्या पर निर्भर करती है। जिसकी संख्या अधिक होगी, वही इस देश पर शासन करेगा तथा मुसलमान इस ओर योजनाबद्ध रूप से इस ओर आगे बढ़ रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों के आंकड़े यही बतलाते हैं कि हिन्दुओं की जनसंख्या निरन्तर घट रही है तथा मुसलमान एवं ईसाई की संख्या बढ़ रही है। पाकिस्तान में तो हिन्दुओं का प्रतिशत निरन्तर घट रहा है। उनकी सम्पत्तियों पर अधिकार करके उन्हें देश छोड़ने को विवश किया जा रहा है। आज हिन्दुओं की मनोवृत्ति इतनी विकृत हो गयी है कि वह एक या दो सन्तानों की उत्पत्ति को ही अपना धर्म मान बैठे हैं। कहा तो यह भी जाता है कि यदि अच्छी तरह पालन-पोषण नहीं कर सकते तो अधिक सन्तानों से क्या लाभ? तर्क बिल्कुल ठीक है, किन्तु प्रत्यक्षत: देखा जा रहा है कि उच्च पदों परस्थित लाख-दो-लाख रुपया वेतन प्रतिमाह कमाने वाले हिन्दू भी इस एक या दो को अपना धर्म मान बैठे हैं। मेरा मानना है कि यह वेद की आज्ञा का उल्लंघन तथा राष्ट्रीय हानि है।

कुछ लोग राष्ट्रीय संदर्भ में यह तर्क उपस्थित करते हैं कि भारत की जनसंख्या बहुत हो गई है। इसलिए कम सन्तान उत्पन्न करना ही राष्ट्रीय हित में है। इस पर मेरा कहना है कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ उद्योग तथा नाना रोजगार भी तो बढ़ रहे हैं। पहले भूमि पर लम्बे चौड़े घरों मेंरहते थे, अब स्थानाभाव में गांवों में भी दो-तीन मंजिले घर बनाकर ऊपर निवास तथा भूतल (ग्राउण्ड फ्लोर) का उपयोग बैठक आदि के रूप में करते है। शहरों में बहुमंजिले भवन बन ही रहे हैं। पहले किसान वर्ष में एक फसल अपने खेत से काटता था, किन्तु आज वहीं दो-तीन फसल वर्ष में काट लेता है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि के साथ संसाधनों में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है, जिसके कारण आज पहले की अपेक्षा सम्पत्ति बढ़ रही है तथा भुखमरी एवं गरीबी कम हुई है।

जो लोग सम्पन्न होने पर राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि के भय से केवल एक या दो सन्तान उत्पन्न कर रहे हैं, उनसे मेरा प्रश्न है कि इस राष्ट्रकी चिन्ता केवल हिन्दुओं को ही है, अन्य मुसलमानों तथा ईसाईयों आदि को नहीं? यदि है तो वे निरन्तर अधिक सन्तान उत्पन्न करके तथा धर्मान्तरण करके अपनी जनसंख्या वृद्धि क्यों कर रहे हैं? स्पष्ट है कि इस देश पर शासन करने के लिए तथा अपने धर्म या मजहब को फैलाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। अत: मैं बलपूर्वक इस बात को कहना चाहता हूँ कि हमें भी जनसंख्या वृद्धि की इस काल्पनिक राष्ट्रीय चिन्ता को छोड़कर अपने अस्तित्व की भी चिन्ता करनी चाहिए। इस राष्ट्र की तथा वैदिक धर्म की रक्षा यदि करनी है तो हमें सामर्थ्यानुसार कई सन्तानों को जन्म देना चाहिए। यही वेद काआदेश है। हमें इसका भी पालन करना चाहिए।

मेरा तीसरा कथन महिलाओं के सम्बन्ध में है। वेद के आधार पर हम स्त्री जाति को पूर्ण स्वतन्त्र तथा पुरुषों के समान अधिकार देने की बात कहते हैं। इन बातों से किसी का भी विरोध नहीं तथा वेदभक्त इत्यादि इस प्रश्न को न भी उठाएं तो भी समय परिस्थिति तथा सरकार के प्रयत्नों से आज स्त्री जाति किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है। मैं दूसरा पक्ष आपके सामने रखता हूँ। आज भी इसी देश के किसी-किसी प्रान्त में स्त्रियों का क्रय-विक्रय जारी है। हमारा ध्यान उन पर क्यों नहीं जाता तथा इसके लिए आन्दोलन क्यों नहीं किये जाते। वर्तमान शिक्षा तथा पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज हमारी लड़कियाँ कालेजों तथा अपने कार्यालयों में अपने पुरुष मित्रों के साथ बैठकर एवं स्वतंत्रता के नाम पर धूम्रपान, मद्यपान तथा अन्य निषिद्ध कार्यों को नि:संकोच कर रही है। वे अन्य मजहब वाले युवको के साथ गर्व से प्रेम विवाह कर रही हैं। इसे राजकीय संरक्षण भी प्राप्त है। इन कार्यों से वैदिक मर्यादाओं एवं परम्पराओं को बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है। पवित्र वैदिक विवाह संस्था ही ध्वस्त होती जा रही है। वेद का आदेश है कि स्त्री अपने शरीर को पारम्परिक वस्त्रों से ढक कर रखे। इसके विपरीत आज हिन्दू विशेषतर शिक्षित महिलाएं कम वस्त्र धारण करके अर्धनग्नता के प्रदर्शन को अपना मौलिक अधिकार कह रही हैं। मुस्लिम महिलाएं अभी भी अपनी परम्परा का पालन कर रही हैं। दुराग्रह यहां तक है कि कॉलेजों तथा स्कूलों में पढ़ने वाली मुस्लिम युवतियां भी बुरके के पक्ष में आन्दोलन करती हैं। मैं इसका समर्थन तो नहीं कर रहा, किन्त उनकी नग्नता विरोधी वृत्ति का समर्थक हूं। यही वेद कहता है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वेद केवल भारतीय महिलाओं की ही बात तो नहीं कहता, अपितु विश्व की समस्त महिलाओं की बात करता है। यदि भारत में स्त्री पूर्ण स्वतन्त्र है तो पाकिस्तान में उनका बलात् धर्मपरिवर्तन क्यों किया जा रहा है? नवभारत टाइम्स में छपी खबर के अनुसार पाकिस्तान में 40 प्रतिशत हिन्दू महिलाओं का धर्म परिवर्तन हो रहा है तथा लगभग इसी अनुपात में कार्यालयों में कार्यरत महिलाओं को बलात्कार का शिकार होना पड़ता है। उनकी स्वतन्त्रता की ओर हमारा ध्यान क्यों नहीं है। हम क्यों भारत में महिलाओं को ब्रह्मा, अध्यापिका तथा उपदेशिका आदि पदों पर पेश कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। वेदभक्तों, वैदिक विद्वानों तथा आर्यसमाज का यह परम कर्त्तव्य है कि विश्वभर में महिलाओं की समान स्थिति के लिए यत्न करें। यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है तथा हमें भी अपनी अन्तर्राष्ट्रीय पहचान के लिए यह करना ही होगा।

वेद एवं कुरान-वेद कहता है कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, जबकि कुरान कहती है कि कुरान को न मानने वालों का कत्ल कर दो। मुसलमान भाई कुरान के इसी आदेश का पालन करने में लगे हैं। आतंकवाद या उग्रवाद की जड़ में यही शिक्षा है। तालिबानी तो इसके प्रसारार्थ सिर की बाजी लगा रहे हैं। इससे कृण्वन्तों विश्वमार्यम् का उद्घोष केवल कहने तक सीमित रह गया है। इसका क्रियान्वयन तभी सम्भव है जबकि वेद भक्त जनता तथा वैदिक विद्वान् कुरान की इस राष्ट्र विरोधी तथा जनविरोधी शिक्षाओं पर प्रतिबन्ध की माँग सरकार के सामने सशक्त रूप में उठाये। वेद एवं कुरान पर बड़े-बड़े सम्मेलन, शास्त्रार्थ बहस छेड़ी जाये कि कुरान की ऐसी शिक्षाओं पर प्रतिबन्ध क्यों न लगा दिया जाये जो कि समाज को विघटित कर रही है। यदि वेद में ऐसा हो तो उस पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाये, किन्तु वहां ऐसा कुछ है ही नहीं। महर्षि दयानन्द ने अकेले ही यह कार्य किया था। उस ऋषि का ही साहस था कि उन्होंने उस समय सत्यार्थ प्रकाश के 13वाँ तथा 14वाँ समुल्लास लिखे। वेद भक्तों को श्रृंखलाबद्ध रूप से ऐसा करना चाहिए।

शान्ति नहीं उग्रता :- वेद कहता है - अहं भूमि माददामार्याय। किन्तु यह भूमि तो अनार्यों से परिपूर्ण होती जा रही है। वर्तमान तथा रावण राज्य में क्या अन्तर है। तब भी अपहरण, हत्याएं, बलात्कार, मांसाहार, सुरापान आदि दुष्कृत्य होते थे, अब भी होते हैं। तब भी अवैदिक यज्ञ होते थे या शुद्ध यज्ञों को ध्वस्त किया जाता था, अब भी भैरव के भक्त यज्ञ में शराब की आहुति देते हैं। ये सभी ऐसे दुष्कर्म हैं कि उपदेश से नहीं मान सकते। एकमात्र दण्ड ही इनका सुचारक है। वेद अदभ्नन्तोऽरावण:। इसीलिए कह रहा है कि ऐसे दुष्टों का वध कर दो। वेद में ऐसे लोगों को वृत्र कहा गया है। ये पूरे समाज को घेर लेते हैं। अपनी चपेट में ले लेते हैं। वेद वृत्रों के लिए कहता है - विवृश्चस्य हनू रुजा। हे वेद भक्त! तू ऐसे वृत्रों के ढोही को छोड़ दे। लोकभाषा में इसे ही ऐसे कहते हैं कि तेरा जबड़ा तोड़ दूंगा। ऐसे दुष्टों का जबड़ा तोड़ देना ही वेद के आदेश का पालन करना है।

वेद केवल शान्ति का ही उपदेश नहीं देता। प्रत्येक कार्य के अन्त में शान्तिपाठ करके हम भी पूर्ण शान्त हो गये जबकि वेद को यह अभीष्ट नहीं। वेद में पृथिवी के धारक तत्त्वों में उग्र नामक गुण का भी उल्लेख है। सत्यं बृहत् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्मयज्ञ: पृथिवी धारमत्री (अथर्व. 12/1/1) दुष्टों का नाश उग्रता को धारण करके ही होगा, शान्तिपाठ करने से नहीं। यज्ञ अति आवश्यक है। इसके बिना वैदिक धर्म एवं संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती।

- बी.-266, सरस्वती विहार, दिल्ली-34

आर्य जगत की महान विभूति पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा) द्वारा प्रारम्भ किये गये दुर्लभ शारद यज्ञ का भव्य आयोजन 13-14 अक्टूबर, 2015 को दयानन्द मठ चम्बा में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ

चम्बा : गत 15 वर्षों से दयानन्द मठ चम्बा की पुण्यमय यज्ञशाला में परम तपस्वी परोपकारी, यज्ञमय जीवन जीने वाले यज्ञ पुरुष स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के द्वारा प्रतिवर्ष श्रद्धा व निष्ठा से किये जाने वाले ऋग्वेद के 7वें मण्डल के 66वें सूक्त के 11वें मंत्र में वर्णित दुर्लभ शारद यज्ञ इस वर्ष भी पूर्ण निष्ठा व श्रद्धा से किया गया। दुर्लभ शारद यज्ञ पहले की ही भांति गरिमा, भव्यता और अलौकिकता को लिये हुए था। इस दुर्लभ यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सवितानन्द जी (रांची) रहे तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आचार्य महावीर जी अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा ने किया। इस यज्ञ में यजमान के रूप में आचार्य महावीर जी के सुपुत्र स्व. ऋषिकुमार आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती करुणा आर्या, अमृतसर के श्री आशीष मेहरा एवं श्रीमती पूजा मेहरा, जालन्धर की श्रीमती किरण सिंघल, श्री इन्द्र शर्मा, श्री सुरेन्द्र भारद्वाज आदि ने अपना आसन ग्रहण किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सोम्यानन्द जी, ब्र. दीक्षेन्द्र जी, भजनोपदेशक श्री हरीश आर्य तथा श्री हेमचन्द्र आर्य आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने इस दुर्लभ यज्ञ के बीच-बीच में उपदेश देते हुए लोगों को मागंदर्शन प्रदान किया तथा भजनों का कार्यक्रम भी बीच-बीच में चलता रहा। आचार्य महावीर जी की धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती आर्या एवं स्कूल के समस्त स्टाफ तथा आर्य समाज चम्बा के अधिकारियों ने समस्त व्यवस्था सुचारू रूप से संभाल रखी थी।

13 अक्टूबर, 2015 को प्रातः 6 बजे से प्रारम्भ होकर यह विशेष यज्ञ 14 अक्टूबर, 2015 को 9 बजे पूर्ण आहुति के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग 27 घण्टे दिन-रात चलने वाला यह अद्भुत शारद यज्ञ देश में वीरता, पौरुष, स्वाभिमान जागृत करने के उद्देश्य के लिए किया जाता है। स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपनी अन्तिम इच्छा व्यक्त करते हुए अपने अनुयायियों को इस दुर्लभ यज्ञ को निरन्तर करते रहने का दायित्व सौंपा था। इसी भावना के साथ यह विशेष दुर्लभ यज्ञ आयोजित किया गया। स्वामी सुमेधानन्द जी के अचानक देहावसान एवं आचार्य महावीर जी के एकमात्र युवा सुपुत्र का निधन एक असह्य घटना तथा दुःख के रूप में सबको व्याकुल कर रहा था। इस अवसर पर आचार्य महावीर जी ने अपनी मार्मिक अपील मठ के सहयोगियों तथा सर्म्पूण आर्य जगत से करते हुए कहा कि यद्यपि स्वामी जी का साया हमारे सिर से उठ गया और अपने पुत्र के देहावसान से हम अन्दर से टूट गये थे, लेकिन सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी जो पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रिय पात्र, सात्विक व सुलझे हुए वक्ता हैं तथा सरल व भावुक हृदय वाले स्वामी आर्यवेश जी के आशीर्वचन यहाँ बरसते रहे और जिन्हें स्वामी सुमेधानन्द जी की ही तरह हम संरक्षक तथा प्रेरणास्रोत मानते हैं, उनका सम्बल भी भविष्य में हमें प्राप्त होता रहेगा ऐसी आशा करते हैं। उन्होंने हृदय से स्वामी जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी जी अस्वस्थ होते हुए भी चम्बा पहुँचने का लोभ संवरण नहीं कर सके इससे ही मठ के प्रति उनका हार्दिक लगाव और मेरे प्रति स्नेह तथा स्वामी सुमेधानन्द जी के प्रति श्रद्धा प्रतीत होती है।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी जी ने मठ के समस्त कार्यों, प्रकल्पों एवं मठ के माध्यम से होने वाले समाजसेवा के कार्यक्रमों के लिए आर्य जनता से दिल खोलकर सहयोग करने की अपील की। यज्ञ में उपस्थित सभी साधकजन, यज्ञप्रेमी भावबिभोर थे। परमात्मा हर वर्ष इस यज्ञ को भव्यतम रूप से आयोजित करते हुए अतीत के पन्नों को पलटते हुए पूज्य चरणों की स्मृति को तरोजाता करते हुए यह दुर्लभ शारद यज्ञ सम्पन्न कराते रहें यही प्रार्थना है। अत्यन्त उत्साह एवं भावनाओं से ओत-प्रोत वातावरण में इस दुर्लभ यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ और सब विशेष संकल्पों के साथ विदा हुए।

ग्राम भौरांकला, जिला-मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) में त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न

ग्राम भौरांकला में प्रसिद्ध याज्ञिक एवं यज्ञप्रेमी डॉ. इकबाल सिंह आर्य के निवास पर प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 20 से 22 अक्टूबर, 2015 तक त्रिदिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस यज्ञ में प्रमुख प्रवचनकर्ता एवं ब्रह्मा के रूप में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। स्वामी जी के ब्रह्मत्व में निरन्तर दोनों समय यह यज्ञ सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। वेद पाठ श्री वीरपाल शास्त्री एवं श्री अंकित शास्त्री जी ने प्रभावशाली ढंग से किया। यज्ञ की समस्त प्रक्रिया को पूर्ण वैदिक रीति से श्री अंकित शास्त्री ने संभाला। इस विशेष यज्ञ का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के व्यायामाचार्य आचार्य सहसरपाल आर्य ने बड़ी कुशलता के साथ किया। उनका सहयोग श्री लोकेश आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य, सुधीर कुमार आर्य (फुगाना) ने किया। यज्ञ में सर्वश्री ओमवीर सिंह, कुंवर पाल (पूर्व प्रधान), राजवीर सिंह आर्य, बलजोर सिंह, प्रेमचन्द्र, पुरुषोत्तम आर्य (सिसौली), महात्मा रणवीर, नरेश कुमार आदि की विशेष उपस्थिति रही। जिला परिषद् का चुनाव लड़ रहे गाँव के विशिष्ट नव-युवक मास्टर देवेन्द्र सिंह ने यज्ञ में आहुति प्रदान

कर स्वामी जी से आशीर्वाद माँगा। पूर्णाहुति के दिन स्वामी जी ने उपस्थित सैकड़ों स्त्री-पुरुषों को प्रतिदिन प्रार्थना, उपासना, स्वाध्याय तथा परोपकार का कोई एक कार्य अवश्य करने का संकल्प दिलवाया। स्वामी जी ने उपस्थित जन-समूह को सामूहिक ध्यान कराकर ध्यान पद्धति से परिचित कराया। पूरे ग्राम में तथा आस-पास के क्षेत्रों में स्वामी जी के हृदयग्राही प्रवचनों की धूम मची रही तथा दूर-दूर से लोगों ने आकर आहुति प्रदान की तथा प्रवचनों का लाभ उठाया। तीन दिन का यह विशेष कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा। डॉ. इकबाल सिंह के सुपुत्र श्री राजीव कुमार एवं उनकी धर्मपत्नी मोहिनी ने सभी विद्वानों तथा आगन्तुकों के भोजन की सुन्दर व्यवस्था की थी। अतिथि सत्कार का जितना उत्साह इस परिवार में देखने को मिला वह कम ही देखने को मिलता है। श्री इकबाल सिंह के तीनों पुत्रों श्री अरविन्द सिंह, श्री राजीव सिंह तथा श्री अरुण सिंह ने **'अनुव्रती पितु-पुत्रो मात्रा भवति सनमना।'** अर्थात् तीनों पुत्रों ने वेद मंत्र की आहुति देकर माता-पिता के प्रति अपना व्रत दोहराते हुए संकल्प लिया कि वे अपने माता-पिता के व्रतों को पूरा करने वाले बनेंगे। क्रांतिकारी कवि एवं गायक स्वामी सत्यवेश (शुक्रताल) एवं श्री ताराचन्द योगी भी यज्ञ में उपस्थित रहे। स्वामी सत्यवेश जी की विचारोत्तेजक कविताओं ने तहलका मचा दिया और श्रोताओं ने उनकी कविताओं को बहुत पसन्द किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज शक्तिनगर, दिल्ली-60 का त्रीदिवसीय वार्षिकोत्सव 9 से 11 अक्टूबर, 2015 तक अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री प्रेमपाल शास्त्री जी रहे। इस अवसर पर महिला तथा पुरुष समाज के सदस्यों ने आहुतियाँ डालकर वातावरण को सुगन्धित तथा वेदमय कर दिया। 11 अक्टूबर को यज्ञ की पूर्णाहुति प्रातःकाल सम्पन्न की गई और उसके पश्चात् 10 बजे से 1 बजे तक विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व डॉ. रामप्रकाश सरस के उपदेश एवं श्री ओम प्रकाश आर्य के भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मंच संचालन समाज के मंत्री युवा विद्वान श्रीवत्स शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने शक्तिनगर आर्य समाज के गौरवमय इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह समाज देश-विदेश में अतिथि सत्कार के लिए प्रसिद्ध है। 1983 में दयानन्द बलिदान शताब्दी के समय प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से इस समाज में लंगर की सुन्दर व्यवस्था प्रारम्भ की गई थी जो आज तक निरन्तर चल रही है और जिसका शुभारम्भ माता लीलावती गुप्ता जी ने अपनी अन्य सहयोगी बहनों के साथ मिलकर किया था जो आज तक चल रहा है। स्वामी जी ने कहा कि ऋषि लंगर की यह सुन्दर व्यवस्था देश-विदेश में कहीं भी देखने को नहीं मिलती। लेकिन अमेरिका में न्यूयार्क के हिलसाईड एवेन्यू में भी ऐसी व्यवस्था समाज के यशस्वी प्रधान श्री चन्द्रभान जी के प्रयासों से चल रही है। स्वामी जी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला। डॉ. रामप्रकाश सरस के प्रभावशाली प्रवचन ने लोगों का ज्ञानवर्द्धन किया। आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न इस कार्यक्रम को सफल बनाने में स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती रश्मि आर्या, मंत्राणी श्रीमती कांता बाली, श्रीमती शालिनी गुप्ता, श्रीमती विद्यावती, श्रीमती अंजू गुप्ता आदि का विशेष सहयोग रहा। साथ ही श्री हरिसिंह चौहान, श्री सुधीर घई, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री वीरेन्द्र गुप्ता आदि ने भी विशेष योगदान प्रदान किया। आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में कई परिवारों ने यजमान बनकर सुन्दर तरीके से यज्ञ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

पृष्ठ–1 का शेष

राजस्थान में जन–चेतना यात्रा निकालने का हुआ ऐतिहासिक निर्णय

आर्य समाजों तथा आर्य समाजियों से अपील की कि वे सभी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर आर्य समाज का कार्य करें। स्वामी जी ने राजस्थान सभा के पदाधिकारियों को प्रेरित किया कि वे सभी निष्ठावान आर्य समाजियों तथा कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलें तथा किसी प्रकार का मन–मुटाव न होने दें। स्वामी जी ने कहा कि यदि हम सभी आर्य समाज के लोग इकट्ठे होकर कार्य करेंगे तो शीघ्र ही शुभ परिणाम देखने को मिलेंगे।

25 अक्टूबर को दोपहर 11 बजे से 2 बजे तक राजस्थान सभा का साधारण अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें राजस्थान के प्रत्येक जिले से भारी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित हुए। इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री प्रो. कमल पूर्व प्रोफेसर राजस्थान विश्वविद्यालय, श्री सत्य नारायण सिंह रिटायर्ड आई.ए.एस., श्री सुरेन्द्र उपाध्याय, श्री शिव नारायण उपाध्याय, श्री राम सिंह आर्य उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्रीमती मधु यादव, श्रीमती शर्मा, एवं श्री भटनागर जी आदि ने विचार रखे। सभा का संचालन श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने किया। सभा प्रधान श्री हवासिंह एडवोकेट ने उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस प्रकार दो दिवसीय अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। भोजन तथा आवास की व्यवस्था आर्य समाज आदर्श नगर की तरफ से की गई थी जिसमें चक्रकीर्ति सामवेदी मंत्री, अनिरुद्ध साहनी, उपमंत्री, बलदेव राज आर्य सभा कोषाध्यक्ष, श्रीमती ऊषा चांदना, एम. एल. सतीजा, पं. जानकी प्रसाद शास्त्री, पं. राम कुमार, श्री देवेन्द्र त्यागी, श्री नाथूराम आर्य आदि ने आतिथ्य में पलक पावड़े बिछा रखे थे।

गुरुकुल विजयनगर, दरवौला में विशेष यज्ञ सम्पन्न

गुरुकुल विजयनगर, दखौला में विशेष यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस यज्ञ की ब्रह्मा श्रीमती लक्ष्मी भारती आचार्या कन्या गुरुकुल सजुमा, कैथल रहीं। समस्त व्यवस्था में आचार्य धर्मेन्द्र जी का सराहनीय योगदान रहा। ध्वजारोहण सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। इस अवसर पर स्वामी शिवानन्द, आगरा के पूर्व विधायक अनुराग शुक्ला, आचार्य जयेन्द्र जी, स्वामी उद्‌गीथानन्द जी, श्री उमेश चन्द्र कुलश्रेष्ठ, माता राजकुमारी आर्या, माता शांति नागर, सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, प्रसिद्ध कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी तथा भजनोपदेशक श्री वेदपाल आर्य, श्री धनीराम बेधड़क, श्री नन्दलाल निर्भय आदि की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफलता प्रदान की। सम्पूर्ण कार्यक्रम की अध्यक्षता सुशील कुमार विद्यार्थी, अध्यक्ष गुरुकुल प्रबन्ध समिति ने की तथा संयोजन श्री रमाकान्त सारस्वत, मंत्री गुरुकुल प्रबन्ध समिति ने किया। तीनों दिन मंच का संचालन स्वामी विश्वानन्द जी ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराया। गुरुकुल खेड़ा खुर्द तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ में वेदपाठ की भूमिका अत्यन्त विद्वतापूर्ण ढंग से निभाई। इस अवसर पर 17 अक्टूबर, 2015 को रात्रि में भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सारस्वत मोहन मनीषी ने जोशीली कविताएँ सुनाकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों से मुख्य रूप से पधारने वालों में कैप्टन अशोक गुलाटी (नोएडा) श्री देवेन्द्र त्यागी (जयपुर), डॉ. विद्यासागर (आगरा), श्री विजय अग्रवाल कोषाध्यक्ष जिला उपसभा, डॉ. वीरेन्द्र खण्डेलवाल, गुरुकुल के कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द मेहता आदि सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे। दिनांक 18 अक्टूबर को स्वामी विश्वानन्द जी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया जिसमें उन्हें स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल देकर सम्मानित किया गया। दूर-दूर से पधारे आर्य लोगों ने समारोह में वैदिक विद्वानों के

द्वारा प्रदत्त विचारों को अत्यन्त मनोयोग से ग्रहण किया।

इस अवसर पर 16 तथा 17 अक्टूबर को 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता, आवश्यकता एवं स्वरूप' विषय पर बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्‌बोधन में गुरुकुलीय शिक्षा की महत्ता तथा आज के समय में प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए गुरुकुलीय शिक्षा को पूर्ण तर्क एवं व्यवहार तथा विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरने वाली शिक्षा की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि मनुष्य के बच्चे को जन्म के उपरान्त नैमित्तिक ज्ञान लेने की आवश्यकता होती है। विद्यालय में जाने पर अच्छे-बुरे विचारों और क्रिया-कलापों को करने तथा देखने से जो संस्कार बनते हैं उससे उसका व्यक्तित्व बनता है। साथ में पढ़ने वाले बच्चे तथा चारों तरफ का वातावरण उसको प्रभावित करता है और उसी के अनुरूप वह आचरण भी करने लगता है। स्वामी जी ने कहा कि विडम्बना यह है कि मात्र 6 घण्टे स्कूल में रहने के बाद वह पूर्ण उन्मुक्त वातावरण में विचरते हुए विभिन्न प्रकार के बुरे संस्कार लेने के लिए मजबूर होता है, क्योंकि वर्तमान में समाज का वातावरण पूर्णतया विषाक्त हो चुका है। मोबाइल, टेलीविजन, समाचार पत्रों के साप्ताहिक संस्करण और गली–मोहल्ले का माहौल तथा कुसंग एवं मित्र मण्डली के आचरण के बीच बच्चों के भटकने की सम्भावना अत्यधिक बनी रहती है। इन सब बुराईयों से बचने के लिए तथा बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली एक विकल्प बन सकती है। क्योंकि इसमें बच्चे को प्रारम्भ से ही माता–पिता के कुल से निकालकर गुरु के कुल में प्रवेश दिलाया जाता है जहाँ शिक्षा पूर्ण करने तक नियमित रूप से गुरुकुल में ही रहना पड़ता है जिसके कारण बच्चा बाहरी गलत वातावरण तथा गन्दे संस्कारों से पूर्णतया सुरक्षित रहता है तथा आचार्य, अध्यापक, अधिष्ठाता तथा पाठ्यक्रम पूरी तरह पवित्र, सात्विक तथा धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत कर देते हैं। गुरुकुल का विद्यार्थी न केवल नैतिक रूप से अपितु शारीरिक रूप से तथा बौद्धिक रूप से ही पुष्ट नहीं होता, अपितु उसे समस्त ज्ञान–विज्ञान, भूगोल, गणित, इतिहास, समाजशास्त्र, वेद दर्शन, धर्म शास्त्रों का तुलनात्मक अध्ययन करने का भी अवसर मिलता है। जिसके कारण उसकी शिक्षा अत्यन्त उच्च स्तर तक हो जाती है और बच्चे के व्यक्तित्व का सांगोपान विकास होता है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान परिवेश में आज की शिक्षा प्रणाली उसे पूरी तरह नाकाम सिद्ध हो चुकी है और गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली एक अच्छा विकल्प बन सकती है। स्वामी जी ने कहा कि इस गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि गरीब-अमीर तथा सभी जाति-सम्प्रदाय, समुदाय अथवा वर्गों के बच्चों को समान शिक्षा, खान-पान, वस्त्र एवं छात्रावास में रहने की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। यह शिक्षा प्रणाली लड़के-लड़कियों के लिए अलग-अलग व्यवस्था करते हुए सारे राष्ट्र में लागू की जा सकती है। स्वामी जी ने कहा कि हमारा दावा है कि यदि गुरुकुलीय शिक्षा सारे देश में लागू कर दी जाये तो आने वाले 20 वर्षों में देश में किसी भी प्रकार का भेदभाव, छुआछूत अथवा पक्षपात नहीं रहेगा तथा सामाजिक बुराईयाँ स्वत: ही नष्ट हो जायेंगी। स्वामी जी ने गोहत्या के सम्बन्ध में बड़े विस्तार से तथ्य उपस्थित करते हुए कहा कि जब तक भारत का प्रत्येक व्यक्ति या वह व्यक्ति जो गाय को उपयोगी तथा पवित्र पशु के रूप में मानता हैं उसे गाय पालना प्रारम्भ कर देना चाहिए। जब तक गाय पालना प्रारम्भ नहीं किया जाता तब तक गोवंश की रक्षा सम्भव नहीं हो सकती। स्वामी जी ने कहा कि लोग गोरक्षा के नारे तो लगाते हैं लेकिन गाय को पालना तथा रखना पसन्द नहीं करते। मेरी नजर में वे गोहत्या के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। स्वामी जी ने कत्लखानों में गोहत्या का मार्मिक दृष्य उपस्थित किया तो लोगों के रोंगटे खड़े हो गये और लोगों में रोष उत्पन्न हो गया। स्वामी जी ने सरकार से मांग की कि गोहत्या तथा गोमांस पर पूर्ण रोक लगाई जाये। स्वामी जी ने शाकाहार अपनाने पर बल देते हुए कहा कि सभी प्राणियों की हत्या बन्द की जानी चाहिए और शाकाहार का प्रचलन लागू होना चाहिए।

23 से 25 अक्टूबर, 2015 तक खेड़ी राजपूतान जिला-मेरठ में आर्य समाज के भामाशाह प्रसिद्ध दानवीर, वैदिक विद्वान ठाकुर विक्रम सिंह की अध्यक्षता में विशाल आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन हुआ सम्पन्न

खेड़ी राजपूतान, जिला-मेरठ में 23 से 25 अक्टूबर, 2015 तक एक विशाल आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज के विद्वान, प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह जी ने की। सम्पूर्ण कार्यक्रम के संयोजन का दायित्व डॉ. वरुण वीर आर्य ने अत्यन्त कुशलता के साथ संभाला। इस महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी के विशेष उद्बोधन हुए। इनके अतिरिक्त स्वामी शिवानन्द जी ने भी अपने विचार रखे। श्री सहदेव बेधड़क ने महर्षि दयानन्द के गीत सुनाकर कार्यक्रम में धूम मचा दी। सोम चौबीसी के विविध ग्रामों से पधारे हजारों लोगों के बीच डॉ. सत्यपाल सिंह जी ने वेद, महर्षि दयानन्द और गाय पर अपने विद्वतापूर्ण विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि जब तक वेद के मानवतावादी विचारों को लोग स्वीकार नहीं करेंगे तब तक समाज में साम्प्रदायिक सद्भाव और सुख-शांति स्थापित नहीं हो सकती। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के तेजस्वी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें वर्तमान युग का क्रांतिकारी समाज सुधारक बताया। उन्होंने गोवंश की रक्षा के लिए लोगों को प्रेरित किया कि वे अपने-अपने घरों में गाय पालना शुरू करें। केवल नारेबाजी से गाय की रक्षा नहीं हो सकती। सरकारों के द्वारा खोले जा रहे शराब के ठेकों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा कि जब सरकार शराब बेचकर पैसा कमाने लग जाती है तो लोगों के कल्याण की बात स्वत: समाप्त हो जाती है। उन्होंने आम जनता का आह्वान करते हुए कहा कि वे शराब से बचें और सरकार को विवश करें कि शराब के ठेकों को बन्द किया जाये। सांसद जी ने आर्य समाज के संगठन में घुस आये पद-लोलुप एवं स्वार्थी लोगों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि आप सब ऐसे स्वार्थी लोगों का सहयोग न करें जो अपने निजी स्वार्थों के लिए आर्य समाज की गरिमा को धक्का पहुँचा रहे हों। उन्होंने कहा कि मुझे पता लगा है कि स्वामी आर्यवेश जी देश-विदेश में वेद प्रचार करके वापस लौटे हैं और वे अत्यन्त परिश्रम के साथ समर्पित होकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि हमारे संन्यासी वैदिक धर्म को फैलाने में विशेष पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसे समर्पित और निष्ठावान लोगों का आप सबको सहयोग करना चाहिए। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने इस अवसर पर सांसद सत्यपाल सिंह जी का शॉल और माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में समाज में फैल रहे धार्मिक पाखण्ड पर गहरा कुठाराघात करते हुए कहा कि आज जहाँ देखो वहाँ मनुष्य के रूप में भगवान उपदेश करते दिखाई पड़ जाते हैं। इन तथाकथित भगवानों व पाखण्डी धर्माचार्यों ने धर्म के क्षेत्र में पाखण्ड को फैलाने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह लोगों को बताते हैं कि चाहे कितना भी बुरा कर्म करो हमारे पास आ जाओ हम आपको उससे मुक्ति दिला देंगे। जबकि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने वेद के माध्यम से घोषणा की कि किये हुए कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है **अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।** । अच्छा कर्म करोगे तो अच्छा फल और बुरा कर्म करोगे तो बुरा फल भोगना ही होगा। उन्होंने कहा कि यदि विशेष प्रार्थनाओं के द्वारा गलत कामों को माफ कराया जा सकता तो आज दुनिया में बुराई कहीं नहीं दिखाई देती। स्वामी जी ने समाज में फैल रही ज्वलन्त समस्याओं पर जोरदार प्रहार करते हुए आम जनता का आह्वान किया कि अब समय आ गया

है कि आर्य समाज के साथ सब खड़े हो जायें और मिलकर इन चुनौतियों का सामना करें। स्वामी जी ने समाज में पनप रही बुराईयों यथा - कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, गोहत्या, महिला उत्पीड़न आदि को जड़ मूल से समाप्त करने के लिए जन-जागरण फैलाने की आवश्यकता पर बल दिया। ठाकुर विक्रम सिंह की विशेष प्रशस्ति करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को उन पर गर्व है। आर्य समाज के विद्वानों, भजनोपदेशकों तथा कार्यकर्ताओं का शानदार सम्मान करके उन्होंने एक नई परिपाटी को जन्म दिया है। जिससे निश्चित रूप से जहाँ आर्य समाज के विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्द्धन होगा वहीं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में उन्नति भी होगी। स्वामी जी ने कहा कि ठाकुर साहब के दिल में आर्य समाज और राष्ट्र के प्रति जबरदस्त श्रद्धा है। ईश्वर ने उन्हें शक्ति दी है और वे धन का सदुपयोग करना भी जानते हैं। इनके सुपुत्र डॉ. वरुणबीर आर्य एक होनहार तथा प्रतिभावान आर्य युवक हैं, जिन्हें भारत सरकार ने आई.सी.सी.आर. का सदस्य नियुक्त किया है। मुझे पूर्ण आशा है कि डॉ. वरुणबीर आर्य भविष्य में आर्य समाज के कर्णधार सिद्ध होंगे।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से सर्वश्री सहदेव सिंह बेधड़क, बृजपाल कर्मठ, गजराज आर्य, जबर सिंह खारी, श्रीपाल आर्य, महाशय वेदराम आर्य, सोमदत्त शास्त्री, आचार्य धर्मवीर शास्त्री, राकेश, डॉ. वीरपाल आर्य, पं. धनकुमार आर्य आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज गन्नौर, जिला-सोनीपत (हरियाणा) में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली उद्बोधन

आर्य समाज गन्नौर, जिला-सोनीपत (हरि.) में 9 से 11 अक्टूबर, 2015 तक आयोजित त्रिदिवसीय उत्सव में 10 अक्टूबर को सायं 3 से 5 बजे तक आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर स्वामी जी ने देश के शहीदों की स्मृति को ताजा करते हुए शहीदे आज़म भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, स्वामी श्रद्धानन्द से सम्बन्धित जोशीले प्रसंगों को सुनाकर लोगों में जोश भर दिया तथा युवाओं को राष्ट्ररक्षा तथा समाज सुधार के लिए आगे आने का आह्वान किया। स्वामी जी ने जब रामप्रसाद बिस्मिल की रोंगटे खड़े करने वाली कहानी सुनाई तो लोगों के आंसू निकल पड़े। उन्होंने कहा कि रामप्रसाद बिस्मिल ने जब घर छोड़ा और राष्ट्रभक्त संगठन बनाने की योजना बनाई तो अपने साथियों से उन्होंने कहा था कि -

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रहकर।

मुझे भी पाला था माँ-बाप ने दु:ख सह-सहकर।

वक्ते रूख्सत इतना भी न आये कहकर।

तिफ्ल (आसुँओं) इन्हें ही समझ लेना अपना दिल बहलाने को।

स्वामी जी ने अत्यन्त मार्मिक दृष्टान्त सुनाकर युवाओं में रक्त की धारा तेज कर दी। स्वामी जी के मार्मिक तथा हृदयग्राही उद्बोधन का श्रोताओं ने तालियों के गड़गड़ाहट से कई बार स्वागत किया। इससे पूर्व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के प्रभावशाली प्रवचन श्रृंखला चलती रही। 11 अक्टूबर को विधिवत उत्साहपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस कार्यक्रम के प्रेरणा स्रोत पूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज जो यमुनानगर में रहते हैं और गन्नौर जिनका जन्म स्थान है ने स्वामी जी का दिल की गहराईयों से परिचय देते हुए कहा कि मैंने कभी किसी व्यक्ति को अपनी कसौटी पर खरा उतरते नहीं पाया, लेकिन मुझे यह कहते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि स्वामी आर्यवेश जी को मैंने अत्यन्त बारीकी और निकटता से परखा है तथा इनके व्यवहार तथा कार्यों को पैनी नजर से देखा है। मैं इनसे पूरी तरह प्रभावित हूँ और मेरी कसौटी पर यह पूर्ण रूप से खरे उतरते हैं और मैं इसीलिए इनको जगह-जगह आमंत्रित करता हूँ। उन्होंने कहा कि स्वामी

आर्यवेश जी अत्यन्त निष्ठा तथा परिश्रम से आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं इनका तन-मन-धन से आप सब साथ दें और मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनके नेतृत्व में आर्य समाज का ध्वज निरन्तर बुलन्दी को प्राप्त होता रहेगा।

इस अवसर पर श्री मोहित आर्य ने अपने भजनों से कार्यक्रम में समा बाँध दिया। मंच का अत्यन्त कुशलता से संचालन श्री ओम प्रकाश वर्मा ने किया।

स्वास्थ्य चर्चा

पपीते के ११ स्वास्थ्यवर्द्धक गुण

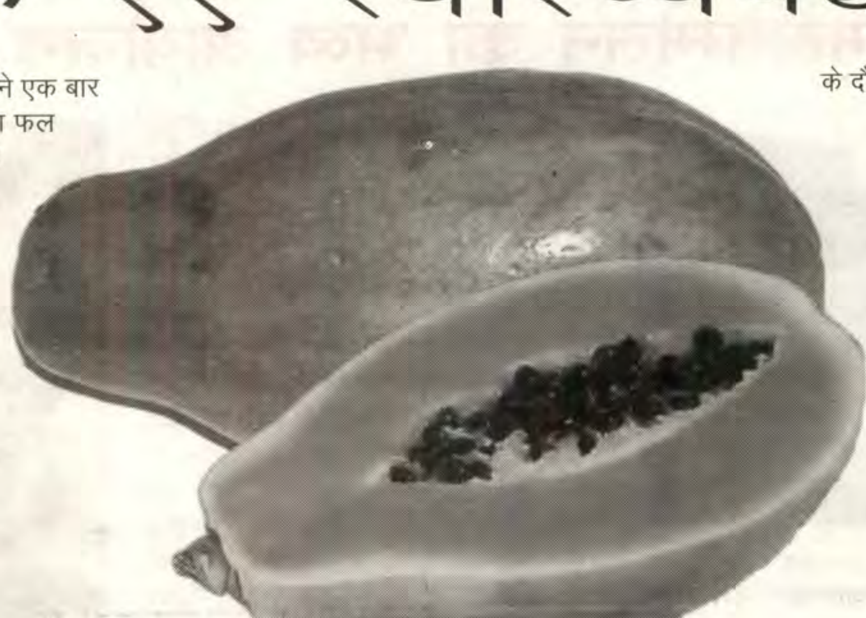

एक इतालवी समुद्रयात्री क्रिस्टोफर कोलंबस ने एक बार कहा था कि पपीता फरिश्तों का फल है। एक ऐसा फल जिसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में मौजूद होता है और इसमें स्वास्थ्य के लिए कई हितकारी गुण निहित होते हैं। पपीते के कुछ बेहतरीन फायदों की सूची आगे दी गयी है।

1. कोलेस्ट्रोल कम करता है

पपीते में फाइबर, विटामिन सी और एंटी–ऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में होता है जो आपकी रक्त–शिराओं में कोलेस्ट्रोल के थक्के नहीं बनने देता। कोलेस्ट्रोल के थक्के दिल का दौरा पड़ने और उच्च रक्तचाप समेत कई अन्य ह्दय रोगों का कारण बन सकते हैं। यह भी पढ़ें रू कोलेस्ट्रोल पर कसें लगामदृ रहें ह्दय रोगों से दूर।

2. वजन घटाने में मदद करता है

जिन लोगों का लक्ष्य अपना वजन कम करना है उन्हें अपने आहार में पपीते को जरूर शामिल करना चाहिए क्योंकि इसमें कैलोरी बहुत कम होती है। पपीते में मौजूद फायबर एक और जहां आपको तारो–ताजा महसूस करवाता है वहीं आपकी आँत की मूवमेंट को ठीक रखता है जिसके फलस्वरूप वजन घटाना आसान हो जाता है। यह भी पढ़ें रू वजन घटाने के लिए 12 योगासन।

3. आपकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है

आपका प्रतिरोधक तंत्र आपको बीमार कर देने वाले कई संक्रमणों के विरुद्ध ढाल का काम करता है। केवल एक पपीते में इतना विटामिन सी होता है जो आपके प्रतिदिन की विटामिन सी की आवश्यकता का 200 प्रतिशत होता है। जाहिर तौर पर ये आपके प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत करता है।

4. मधुमेह रोगियों के लिए अच्छा है

पपीता मधुमेह रोगियों के लिए आहार के रूप में एक बेहतरीन विकल्प है क्योंकि स्वाद में मीठा होने के बावजूद इसमें शुगर नाम मात्र का होता है। साथ ही, वे लोग जो मधुमेह के मरीज नहीं हैं, इसे खाकर मधुमेह होने के खतरों को दूर कर सकते हैं। यह भी पढ़ें रू मधुमेह या डायबिटीज का घरेलु उपचार।

5. आपकी नजरों के लिए फायदेमंद है

पपीते में विटामिन ए भी प्रचुर मात्रा में होता है जो आपके आँखों की रोशनी को कम होने से बचाता है। कोई भी व्यक्ति उम्र बढ़ने की वजह से आँखों की रोशनी से मरहूम नहीं होना चाहता, और पपीते को अपने आहार में शामिल करके आप ऐसी मुसीबत से बाख सकते हैं।

6. गठिया रोगों से बचाता है

गठिया वास्तव में एक ऐसी बीमारी है जो शरीर को बेहद दुर्बल तो करती ही है जीवनशैली को बुरी तरह प्रभावित भी करती है। पपीते खाना आपकी हड्डियों के लिए बेहद लाभकारी हो सकता है, इनमें विटामिन–सी के साथ–साथ सूजन–रोधी गुण होते हैं जो गठिया के कई रूपों से शरीर को दूर रखता है। एक अध्ययन के अनुसार विटामिन–सी युक्त भोजन न लेने वाले लोगों में गठिया का खतरा विटामिन–सी का सेवन करने वालों के मुकाबले तीन गुना होता है।

7. पाचन शक्ति बढ़ाता है

आज के दौर में ऐसे खाने से मुंह मोड़ना जो आपके पाचन तंत्र के लिए बुरा हो, लगभग असंभव है। कई बार हम ऐसा भोजन करने को मजबूर होते हैं जो या तो जंक फूड की श्रेणी में आता है या अधिक तेल में पका होता है। रोज एक पपीते का सेवन कभी–कभार खाए ऐसे भोजन के साइड–इफेक्ट को दूर रखता है क्योंकि इसमें फाइबर के साथ–साथ पपैन नामक एक एंजाइम होता है जो आपकी पाचन शक्ति को दुरुस्त रखता है।

8. माहवारी के दर्द से छुटकारा दिलाता है

माहवारी के दर्द से गुजर रही महिलाओं को अपने आहार में पपीता जरूर जोड़ना चाहिए क्योंकि पापिन नाम एंजाइम माहवारी के दौरान रक्त के प्रवाह को दर्द से दूर रखता है।

9. उम्र बढ़ने की निशानियों को रोकता है

हम सब हमेशा जवान रहना चाहते हैं पर कोइ भी ऐसा करने में कामयाब नहीं हो पाया है। फिर भी, स्वास्थय वर्द्धक आदतों जैसे एक पपीता रोजाना, की मदद से आप अपनी उम्र के मुकाबले अधिक युवा दिख सकते हैं। पपीते में विटामिन सी, विटामिन ई और बीटा–कैरोटीन सरीखे एंटी–ऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में होते हैं जो आपकी त्वचा को झुर्रियों से दूर रखते हैं।

10. कैंसर को रोकता है

पपीते में एंटी–ऑक्सीडेंट, phytonutrients और flavonoids प्रचुर मात्रा में होते हैं जो आपकी कोशिकाओं को कश्ती पहुँचने नहीं देते। कुछ अध्ययनों ने पपीते के सेवन से कोलन और प्रोस्टेट कैंसर के खतरे के कम होने की पुष्टि भी की है। यह भी पढ़ें रू कैंसर के दस बेतुके मिथक।

11. तनाव कम करने में मदद करता है

पूरे दिन टूटकर काम करने के बाद घर लौटने पर अगर एक प्लेट पपीते खा लिए जाएं तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता। इस कमाल के फल में आपको तनाव से दूर रखने की ताकत है। युनिवार्सिटी ऑफ अलाबामा के एक अध्ययन के मुताबिक 200 उह विटामिन सी स्ट्रेस हारमोन को संचालित करने में सक्षम होता है। पपीते में यह प्रचुरता में उपलब्ध होता है। यह भी पढ़ें रू तनाव के इन दस लक्षणों में से आप किसके शिकार हैं?

'''Social Media '''पर ''''आर्य समाज '''' की नई पहल

नमस्ते आर्यजन

2 मिनट 'मिशन आर्यावर्त' के लिए जरूर दें।

आर्यजन हमने मिशन आर्यावर्त के whats app न्यूज बुलेटिन को शुरू किया है। जिसका बहुत सुंदर परिणाम मिला।अब तक लगभग 23 हजार whats app नंबर पर हर सप्ताह हम इसको शेयर करते हैं। इसके माध्यम से हम देश दुनिया में आर्य समाज के सकारात्मक स्वरूप को ले जाना चाहते हैं। आज आर्य समाज कार्य तो बहुत कर रहा है परन्तु उसको सामूहिक रूप से प्रसारित नहीं कर पा रहा। इस बुलेटिन के माध्यम से हम सम्पूर्ण आर्य जगत की गतिविधियों को शामिल करके आप लोगों तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। अभी इस बुलेटिन को सप्ताह में सिर्फ एक दिन प्रचारित व प्रसारित करने का विचार है वो भी रविवार को। इससे जुड़ने के लिए आपको दो कार्य करने है :–

(1) आपको अपना whats app नम्बर अपने नाम व स्थान के साथ लिख कर हमारे पास भेजना है।

ताकि आपको निरंतर बुलेटिन मिलता रहे।

(2) आपको अपना समाचार फोटो के साथ व संक्षिप्त जानकारी के साथ हमारे whats app नम्बर पर भेजना है। ताकि हम उसको whats app बुलेटिन में शामिल कर सकें। इनको आप ग्रुप में पोस्ट न करके सीधे हमारे whats app पर पोस्ट करेंगे।

'''कुछ समय के बाद हम इसका वीडियो version भी तैयार करेंगे।

''''हमारा दूसरा कार्यक्रम'''

आर्य विचार मंथन

मेरे सात सवाल जिसमे लगभग 15 मिनट का किसी एक आर्य संन्यासी,नेता व विद्वान का साक्षात्कार होगा। जिसमे आर्य समाज के विषय पर उनके विचार लिए जायेंगे।

प्रतिदिन वेद, रामायण ,महाभारत, योग, चाणक्य, हितोपदेश आदि पर सुविचार भी आप तक भेजे जायेंगे। हमारा whats app नम्बर 9354840454 है। आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं। आपसे निवेदन है के आप इस सन्देश को ज्यादा से ज्यादा साथियों तक प्रचारित व प्रसारित करें ताकि मिशन आर्यावर्त के संकल्प को मजबूती मिल सके। यदि आप मिशन आर्यावर्त का हिस्सा बनना चाहते हैं हमारे साथ कार्य करना चाहते हैं तो भी आप सम्पर्क जरूर करें।

– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता वरुण मुनि वानप्रस्थ का निधन

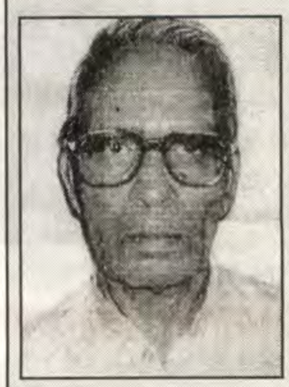

राजस्थान में आर्य जगत के समर्पित निष्ठावान एवं उत्साही कार्यकर्ता श्री वरुणमुनि वानप्रस्थ का 14 अक्टूबर, 2015 को निधन हो गया। इनका जीवन आर्य समाज के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक एवं रोमांचक है। श्री वरुणमुनि का नाम वानप्रस्थ लेने से पूर्व रामकृष्ण आर्य था। उन्होंने आईटीआई रतलाम से ट्रेनिंग प्राप्त की थी। जब रामकृष्ण नौकरी के लिए घर से निकले तब पिताजी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक ले जाओ। मैंने तो पढ़ी नहीं पर तुम अवश्य पढ़ना। रामकृष्ण रावतभाटा में नौकरी करते थे। जहाँ ये रहते थे उस घर के पास एक दम्पत्ति रविवार को प्रातः नहा धोकर आर्य समाज जाते थे। एक दिन रामकृष्ण जी ने इस दम्पत्ति से पूछा कि आप लोग प्रत्येक रविवार को कहाँ जाते हो? उन्होंने कहा कि हम आर्य समाज के सत्संग में जाते हैं। यह सुनते ही उन्हें अपने पिताजी की वह बात याद आई कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना। इस दम्पत्ति से आर्य समाज का नाम सुनकर रामकृष्ण जी ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे वे सत्यार्थ प्रकाश पढ़ते जा रहे थे वैसे-वैसे उनकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगी और मन में सोचने लगे कि मैं अब तक कहां था और वे आर्य समाज के प्रति समर्पित हो गए। वे अनेक आर्य समाजों में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। उन्होंने 1987 में कोटा में आर्यवीरदल की स्थापना की व उसका पहला शिविर लगाया। नौकरी करते हुए उन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय से बीए और एमए किया और 1990 में 'महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा' ख्याति प्राप्त ग्रन्थ आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री भवानी लाल भारती के निर्देशन में लिखा और डॉ. ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्राप्त की। 1991 में आर्य परिवार संस्था, कोटा की स्थापना की और प्रथम राष्ट्रीय आर्य लेखक सम्मेलन आयोजित किया। सन् 2000 में श्रमिक पद से निवृत्त होकर अपने 60वें जन्मदिवस 24 नवम्बर, 2002 को वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर वरुणमुनि वानप्रस्थ नाम से वानप्रस्थ जीवन व्यतीत करते रहे। इन्हीं दिनों उन्हें प्रोस्टेट की शिकायत हो गई और तब से इनका स्वास्थ्य गिरता गया। 9 अक्टूबर, 2015 को इन पर लकवे का आक्रमण हुआ और 14 अक्टूबर, 2015 को 10 बजे प्राण त्याग दिये। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने वरुणमुनि जी के निधन को राजस्थान आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया। सार्वदेशिक परिवार ईश्वर से प्रार्थना करता है कि डॉ. साहब की आत्मा को शांति प्रदान करें। उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के भव्य सभागार में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में विशेष कार्यक्रम का किया गया आयोजन अमेरिका से पधारे डॉ. सतीश प्रकाश का हुआ प्रभावशाली प्रवचन

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के सभागार में 19 अक्टूबर को सायं 4 से 5 बजे तक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर अमेरिका से पधारे डॉ. सतीश प्रकाश का 'उत्तरी अमेरिका के देशों में आर्य समाज का प्रभाव' विषय पर प्रभावशाली प्रवचन सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संयोजन संस्कृत विभाग एवं दयानन्द चेयर के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने किया। इस अवसर पर डॉ. सतीश प्रकाश के साथ अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने दुनिया के अनेक देशों में भारत से बंधुआ मजदूर बनाकर ले जाये गये गिरमिटिया लोगों की रोंगटे खड़े करने वाली मार्मिक कथा पर प्रकाश डाला। डॉ. सतीश प्रकाश ने गुयाना, ट्रिनीडाड, वेस्ट इंडीज़, सूरीनाम आदि देशों में भारत से गये गिरमिटियाओं के माध्यम से वहाँ स्थापित किये गये आर्य समाज के कारण जो सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिवर्तन आये उसका वर्णन तथा दिग्दर्शन कराया। डॉ. सतीश जी ने बीच-बीच में सुन्दर गीतों के माध्यम से श्रोताओं का मन मोह लिया। डॉ. सतीश प्रकाश नि:संदेह एक ऐसे युवा विद्वान हैं जिनका हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी सहित कई भाषाओं पर अधिकार है। उनकी वकृत्व कला बेहद आकर्षक है। वे जहाँ धारा प्रवाह वक्ता हैं वहीं मधुर गीत गाकर व्याख्यान को आकर्षक बना देते हैं। मंच पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. बलवीर आचार्य भी विद्यमान थे। उनके अतिरिक्त उनकी धर्मपत्नी डॉ. कृष्णा, प्रो. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, आचार्य वेदव्रत शास्त्री, डॉ. श्यामदेव आचार्य, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, श्री सुखवीर सिंह दहिया, श्री सत्यकाम आर्य, श्री करतार सिंह आदि के अतिरिक्त अन्य सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में ग्राम खरड़ (उ. प्र.) में हुई कार्यकर्ता बैठक

20 अक्टूबर, 2015 को दोपहर 12 से 2 बजे तक ग्राम खरड़ में श्री विजेन्द्र सिंह मलिक प्रधान के निवास स्थान पर कार्यकर्ताओं की एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्बोधन रखा गया। इस बैठक में कार्यकर्ताओं ने आश्वासन दिया कि अपने क्षेत्र में तथा आस-पास के इलाकों में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए कटिबद्ध होकर कार्य करेंगे। इस बैठक को सफल बनाने में श्री मनीष कुमार आर्य, श्री लोकेन्द्र आदि ने विशेष रुचि ली और श्री विजेन्द्र सिंह जी ने स्वामी जी को आश्वस्त किया कि अभी पंचायत चुनाव में लोग व्यस्त हैं अत: उसके बाद आर्य युवक परिषद् का गठन करके आस-पास के गांवों में संगठन को मजबूत बनाया जायेगा तथा आपके प्रत्येक आदेश का पालन करते हुए आर्य समाज के झण्डे को ऊँचा करेंगे। श्री विजेन्द्र सिंह जी के सुपुत्र श्री दीपक ने सभी कार्यकर्ताओं तथा अतिथियों का फलाहार, मिष्ठान द्वारा जलपान कराकर विशेष आतिथ्य किया तथा श्री विजेन्द्र सिंह मलिक ने स्वामी जी को दक्षिणा देकर सम्मानित किया।

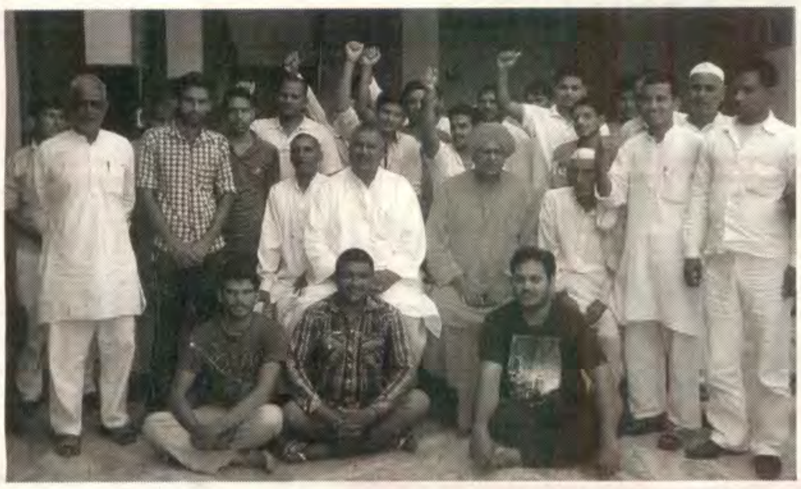

ग्राम-सिसौली (उ. प्र.) में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कालेज के विद्यार्थियों को बताये उन्नति के सूत्र

भौरांकला में सामवेद पारायण यज्ञ के दौरान स्वामी जी ने क्षेत्र के प्रसिद्ध ग्राम सिसौली में एक विशेष कार्यक्रम में भाग लिया। यह कार्यक्रम सिसौली स्थिति महर्षि दयानन्द इण्टर कालेज में दोपहर 12 से 2 बजे तक रखा गया था जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। स्वामी जी के प्रवचनों से सभी अत्यन्त उत्साहित थे। इस कार्यक्रम का संयोजन प्रधानाचार्य श्री गजेन्द्र सिंह आर्य ने किया। इनके अतिरिक्त प्रबन्धक श्री महिपाल सिंह आर्य, श्री ऋषिपाल सिंह आर्य, श्री तेजवीर सिंह, श्री अनिल कुमार आदि ने सहयोग किया। विदित हो कि यह सिसौली ग्राम किसान नेता स्व. श्री महेन्द्र सिंह टिकैत का गाँव है तथा यहाँ पर आर्य समाज का मजबूत आधार है। जिसका श्रेय श्री राजेन्द्र सिंह आर्य को जाता है।

सिसौली, खरड़ तथा भौरांकला आदि के कार्यक्रम ब्र. सहसरपाल के प्रयत्नों से आयोजित हुए और सभी कार्यक्रम पूर्णतया सफल रहे। स्वामी जी के समय का पूरा सदुपयोग सहसरपाल जी ने किया। इन सब कार्यक्रमों के लिए अपने महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में से समय निकालकर स्वामी जी ने यह कार्यक्रम सम्पन्न किये।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

स्व. डॉ. जोगेन्द्र सिंह यादव की पुण्य तिथि पर उनके पैत्रिक ग्राम मीरपुर, तह.-नारनौल, जिला-महेन्द्रगढ़ (हरि.) में विशेष यज्ञ का भव्य आयोजन

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, विश्व विख्यात वैज्ञानिक, समाजसेवी, कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय में प्राणी विज्ञान विभाग के प्रोफेसर जोगेन्द्र सिंह यादव की पुण्य तिथि के अवसर पर उनके पैत्रिक गाँव मीरपुर तह. नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ (हरि.) में 24 अक्टूबर को प्रात: 9 से 11 बजे तक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अहीरवाल क्षेत्र के प्रसिद्ध सन्त स्वामी शरणानन्द जी महाराज, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के मंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने डॉ. जोगेन्द्र सिंह यादव के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके पद चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर हुए विशेष यज्ञ का ब्रह्मत्व कप्तान जगत राम आर्य ने संभाला तथा उत्तम रीति से यज्ञ सम्पन्न कराया तथा डॉक्टर साहब के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की। प्रो. श्योताज सिंह जी के प्रस्ताव पर यह भी निश्चय हुआ कि पुण्य तिथि के स्थान पर स्मृति दिवस के रूप में यह दिवस मनाया जाये। डॉ. जे. एस. यादव की धर्मपत्नी श्रीमती कमला एवं उनके तीनों सुपुत्र ब्रिगेडियर श्री अरविन्द यादव, प्रो. अतुल यादव एवं पत्रकार श्री असीम यादव सपत्नीक यज्ञ में उपस्थित रहे। इस अवसर पर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने यज्ञ में आहुति प्रदान कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

माता सुमित्रा देवी आर्या दिवंगत

प्रिय परिवार की स्नेहमयी माता श्रीमती सुमित्रा देवी आर्या, सिद्धान्त रत्न (84 वर्ष), धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री देवप्रिय आर्य सिद्धान्त शास्त्री, सोनीपत का निधन दिनांक 30 अगस्त, 2015 को हुआ। उनका अंत्येष्टि संस्कार गुड़गांव में किया गया तथा प्रार्थना सभा 2 सितम्बर, 2015 को हुआ। आर्य समाज सैक्टर 14, सोनीपत में लगभग 400 लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। आप प्रतिष्ठित समाजसेवी लाला परशुराम 'आर्य सेवक' झज्जर (हरि.) की सुपुत्री व भिवानी (हरि.) के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के धनी सर्वमान्य पंडित फूलचन्द्र शर्मा 'निडर' की पुत्रवधु थीं। आप अत्यन्त सरल, स्वाध्यशील, पूर्ण रूप से वैदिक धर्म को समर्पित आर्य महिला थीं। आप अपने पीछे 6 पुत्र एवं 3 पुत्रियों का विशाल परिवार छोड़ गई हैं जो भारत के कई स्थानों पर वैदिक धर्म की परम्परा को आगे बढ़ा रहा है। मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व ही माता जी का 85वां जन्मदिन परिवार के सदस्यों ने मिलजुल कर मनाया था। इस अवसर पर प्रिय परिवार की ओर से एक ट्रस्ट प्रिय परिवार फाउंडेशन की स्थापना की गई। यह ट्रस्ट वैदिक धर्म के प्रचारार्थ कई माध्यमों से काम करेगा। इसी अवसर पर माता जी द्वारा संग्रहीत भजनों की पुस्तिका 'मेरे प्रिय गीत' का विमोचन भी माता जी के हाथों किया गया। यह पुस्तिका प्रार्थना सभा के दिन सभी उपस्थित व्यक्तियों को व सम्बन्धित संस्थाओं में प्रेरणा के रूप में वितरित की गई।

- प्रिय परिवार ऋतप्रिय आर्य, मो.:-9824147749

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

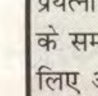

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

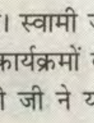

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है
10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

**इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति।
यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।**

–ऋ० ८/२/१८ ; अथर्व० २०/१८/३

ऋषिः–मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः।। देवता–इन्द्रः।। छन्दः–आर्षीगायत्री।।

विनय–आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत–से अत्यन्त लाभकारी कार्यों को शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वञ्चित हो जाते हैं। अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूँ कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार–यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं– इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन ;क्पेबपचसपदम) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है– बेचैनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर भूल–चूक से बिल्कुल रहित होकर– कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस सत्त्वगुण के बने हुए हैं जोकि तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य–प्रमाद करने वाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं?अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार–बार दण्ड दे–देकर, उन्हें पुनः–पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार–उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ–कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊँचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना इस संसार–यज्ञ के लिए सोम–रस का सेवन करना है। तनिक देखो–इन देवों के प्यारे लोगों को देखो– जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार–यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम–रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्त्तव्य में सदा जाग्रत्, कटिबद्ध संनद्ध रहते हुए देव–तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ–देवाः=देव लोग सुन्वन्तम्=यज्ञकर्म करते हुए की इच्छन्ति=इच्छा करते हैं। न स्वप्नाय स्पृहयन्ति=निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। अतन्द्राः=स्वयं आलस्य–रहित ये देव–लोग प्रमादम्=गलती, भूल करने वाले का यन्ति=नियमन करते हैं।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

वर चाहिए

उम्र 25 वर्ष, लम्बाई 5 फुट 5 इंच, शिक्षा-एम.ए. ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग (प्रथम श्रेणी), बी.एड., आई.जी.डी.ई. मुम्बई, नेट परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए प्रयासरत, उच्चकोटि की वक्ता, सुन्दर, गृह कार्य में दक्ष, गौर वर्ण, अति योग्य जाट आर्य कन्या के लिए सजातीय, सुयोग्य, स्वस्थ, सुन्दर आर्य समाजी वर की आवश्यकता है।

-: सम्पर्क सूत्र :-
07830781545, 07060150375

बधू चाहिए

उम्र 23 वर्ष, कद 6 फुट 1 इंच, गौर वर्ण, अति सुन्दर व स्वस्थ 12वीं उत्तीर्ण स्व व्यवसाय, सम्पन्न पारिवारिक आर्य जाट युवक के लिए आर्य सजातीय परिवार की गृह कार्य में दक्ष कन्या चाहिए। वर्जित तोमर गोत्र।

-: सम्पर्क सूत्र :-
07830781545, 07060150375

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

सत्यार्थ प्रकाश

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

लागत मूल्य 80/– रुपये

100 प्रति लेने पर मात्र 40 रुपये में दिया जायेगा

भारी छूट पर उपलब्ध

10 से अधिक प्रति लेने पर 50 रुपये में दिया जायेगा

23 गुणा 36 के 16वें साईज तथा पेपर बैक जिल्द में आकर्षक टाइटल के साथ बढ़िया कागज पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।